सूरह — एक कहानी

सूरह सबा

सबा की क़ौम

पूरा सफ़र — वो सल्तनत जो शुक्र कहना भूल गई —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 34 • 54 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरह
1. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, जिसकी है जो आसमानों और ज़मीन में है, और आख़िरत में भी तारीफ़ उसी की है।

इअ्मलू आल दाऊद शुक्रा; व क़लीलुम्-मिन 'इबादियश्-शकूर
13. ऐ दाऊद के घराने, शुक्र में अमल करो; और मेरे बंदों में शुक्र-गुज़ार कम ही हैं।

मा दल्लहुम 'अला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्सअतह
14. किसी ने उन्हें उसकी मौत पर नहीं बताया सिवाए ज़मीन के एक कीड़े के जो उसकी लाठी खा रहा था।

कुलू मिर्-रिज़्क़ि रब्बिकुम वश्कुरू लह; बल्दतुन तय्यिबतुंव्-व रब्बुन ग़फ़ूर
15. अपने रब के रिज़्क़ में से खाओ और उसका शुक्र करो; एक पाक सर-ज़मीन और एक बख़्शने वाला रब।

कुल इन्नमा अ'इज़ुकुम बि-वाहिदह; अन तकूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्म ततफ़क्करू
46. कहो: मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूँ: कि तुम अल्लाह के लिए दो-दो और अकेले-अकेले खड़े हो, फिर ग़ौर करो।

कुल जाअल्-हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा यु'ईद
49. कहो: हक़ आ गया, और बातिल न कुछ शुरू कर सकता है न दोबारा ला सकता है।

दोनों जहानों में तारीफ़

बेटा, ये सूरह एक ऐसी तारीफ़ से खुलती है जो किसी और जैसी नहीं: '**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़** — **सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए**, जिसकी है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है — **व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरह** — **और आख़िरत में भी तारीफ़ उसी की है** — **व हुवल्-हकीमुल्-ख़बीर** — और वो हिकमत वाला, बा-ख़बर है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **यहाँ तारीफ़ और वहाँ तारीफ़।** इस दुनिया में उनकी तारीफ़ वो

करते हैं जो समझते हैं, और अगली में हर कोई करेगा — उन मुंकिरों समेत, जब हक़ ना-क़ाबिल-ए-इनकार हो जाएगा।

'**यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्-अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा** — वो **जानता** है जो ज़मीन में **दाख़िल** होता और जो उस से **निकलता** है — **व मा यन्ज़िलु मिनस्-समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा** — और जो आसमान से **उतरता** और जो उस में **चढ़ता** है।'

बेटा, हरकत की चार समतें, सब दर्ज: हर बीज और बारिश का हर क़तरा नीचे जाता, हर कोंपल और हर चश्मा ऊपर आता, हर फ़ैसला नीचे आता, हर अमल और दुआ ऊपर जाती।

और मुंकिरों ने कहा कि क़ियामत कभी न आएगी, और अल्लाह ने एक क़सम से जवाब दिया: '**क़ुल बला व रब्बी ल-तअ्तियन्नकुम** — कहो: **हाँ, मेरे रब की क़सम, वो ज़रूर तुम पर आएगी** — '**आलिमिल्-ग़ैब** — ग़ैब का जानने वाला — **ला यअ्ज़ुबु 'अन्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन फ़िस्-समावाति व ला फ़िल्-अर्ज़ि व ला अस़्ग़रु मिन ज़ालिक व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन** — उस से आसमानों या ज़मीन में एक **ज़र्रा भर** भी ग़ायब नहीं, **न उस से छोटा** न बड़ा, मगर ये कि वो एक खुले दफ़्तर में है।'

बेटा, 'व ला अस़्ग़रु मिन ज़ालिक' — न उस ज़र्रे से भी कुछ **छोटा**। चौदह सदी पहले, जब ज़र्रा सब से छोटी मुमकिन चीज़ समझा जाता था, इस किताब ने उसके नीचे जो कुछ भी हो उसका दरवाज़ा खुला रखा।

अमल करो, ऐ दाऊद के घराने, शुक्र में

फिर सूरह दो अज़ीम बादशाहों को याद करती है, बेटा — और दोनों से गुज़रता मौज़ू' **शुक्र** है।

'**व लक़द अतैना दाऊद मिन्ना फ़ज़्ला** — और हमने यक़ीनन दाऊद (अलैहि0) को अपनी तरफ़ से **फ़ज़्ल** दिया — **या जिबालु अव्विबी म'अहू वत्-तैर** — **ऐ पहाड़ो**, उसके साथ (हमारी तस्बीह) **दोहराओ**, और **परिंदे** — **व अलन्ना लहुल्-हदीद** — और हमने उसके लिए **लोहा नर्म** कर दिया।'

बेटा, लोहा — उस दौर का सब से सख़्त माद्दा — उसके हाथों में लचकदार हो गया। '**अनि'अ्मल साबिग़ातिंव्-व क़द्दिर फ़िस्-सर्द** — पूरी ज़िरहें बना और कड़ियों का ठीक अंदाज़ा रख।'

और एक अहम बात ग़ौर कीजिए, बेटा: दाऊद (अलैहि0) एक ख़ज़ाने वाले बादशाह थे, और फिर भी नबी ﷺ ने हमें बताया कि दाऊद (अलैहि0) सिर्फ़ अपने हाथ की कमाई से खाते थे। बेटा, एक नबी-बादशाह जो एक कारीगर की तरह काम करता था। **यही इस दीन में अपनी रोज़ी ख़ुद कमाने का शरफ़ है।**

'**व लि-सुलैमानर्-रीह ग़ुदुव्वुहा शहरुंव्-व रवाहुहा शहर** — और सुलैमान (अलैहि0) के लिए **हवा** — उसकी सुब्ह की मंज़िल एक **महीने** की और उसकी दोपहर की मंज़िल एक **महीने** की — **व असल्ना लहू 'ऐनल्-क़ित्र** — और हमने उसके लिए **पिघले ताँबे** का एक चश्मा बहा दिया।'

और जिन्न उसके सामने काम करते, बनाते '**महारीब व तमासील व जिफ़ानिन कल्-जवाबि व क़ुदूरिर्-रासियात** — ऊँचे महल, बुत (मुजस्समे), **हौज़** जैसे **बड़े प्याले**, और **जमी** हुई देगें।'

और फिर, बेटा, वो हुक्म आता है जो इस पूरी सूरह की कुंजी है: '**इअ्मलू आल दाऊद शुक्रा — अमल करो, ऐ दाऊद के घराने, शुक्र में — व क़लीलुम्-मिन 'इबादियश्-शकूर — और मेरे बंदों में शुक्र-गुज़ार कम ही हैं।**'

बेटा, अल्फ़ाज़ देखिए: 'इअ्मलू... शुक्रा' — शुक्र **अमल** करो। शुक्र 'कहो' नहीं, शुक्र 'महसूस करो' नहीं। उसे **करो**।

क्योंकि इस दीन में शुक्र सीने का एहसास नहीं; ये आज़ा का अमल है। आप अल्लाह का आँखों का शुक्र उन्हें हलाल पर इस्तेमाल कर के करते हैं। सेहत का शुक्र उस से नमाज़ पढ़ कर। दौलत का शुक्र उस में से दे कर। इल्म का शुक्र उसे सिखा कर।

और आयत उस ज़ात की तरफ़ से एक उदास आँकड़े पर ख़त्म होती है जो गिनती है: 'मेरे बंदों में शुक्र-गुज़ार कम ही हैं।' बेटा, अक्सरियत में होना आसान है। **ये आयत एक दावत है कि उस अक़ल्लियत में हो जाओ।**

दीमक और लाठी

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन के सब से हैरत-अंगेज़ मंज़रों में से एक — और इस बात का सबक़ कि हम कितने छोटे हैं, उस सब से अज़ीम बादशाह की मौत के ज़रिए दिया गया जो कभी गुज़रा।

'**फ़-लम्मा क़ज़ैना 'अलैहिल्-मौत मा दल्लहुम 'अला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़िं तअ्कुलु मिन्सअतह** — और जब हमने उसकी **मौत** का फ़ैसला किया, **किसी ने उन्हें उसकी मौत पर नहीं बताया सिवाए ज़मीन के एक कीड़े के जो उसकी लाठी खा रहा था।**'

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए। सुलैमान (अलैहि0) अपनी लाठी के सहारे, खड़े खड़े, फ़ौत हो गए। और जिन्न, जो उसके हुक्म पर मेहनत कर रहे थे, काम करते रहे — क्योंकि वो गोया अभी भी खड़े, उन्हें देखते हुए लगते थे।

एक अर्से तक, किसी को न पता चला। सल्तनत चलती रही, काम जारी रहा, जिन्न खपते रहे — **एक मुर्दा बादशाह के लिए।**

और आख़िर-कार सच किस ने ज़ाहिर किया? कोई एलान नहीं। कोई हकीम नहीं। एक **दीमक**, ख़ामोशी से लकड़ी की लाठी को खाती हुई, जब तक वो झुक न गई और वो गिर पड़े।

'**फ़-लम्मा ख़र्र तबय्यनतिल्-जिन्नु अल्-लौ कानू यअ्लमूनल्-ग़ैब मा लबिसू फ़िल्-'अज़ाबिल्-मुहीन** — और जब वो **गिरे**, जिन्न पर **साफ़** हो गया कि **अगर वो ग़ैब जानते**, तो वो उस ज़लील-कुन **मशक़्क़त** में न रहते।'

बेटा, और यही पूरे वाक़िए की ग़ायत है। उस दौर में लोग समझते थे कि जिन्न पोशीदा चीज़ें जानते हैं — वो काहिनों के पास जाते, उन से डरते, उन्हें मुस्तक़बिल के इल्म का सेहरा देते। और अल्लाह ने एक वाहिद मुज़ाहिरे से सच बे-नक़ाब कर दिया: **ये मख़्लूक़ ये तक न बता सकी कि जो आदमी उनके सामने खड़ा था वो फ़ौत हो चुका।**

बेटा, इस से तीन सबक़ लीजिए। **पहला** — अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब नहीं जानता।

न जिन्न, न काहिन, न नजूमी, न कोई जो तुम्हें तुम्हारे मुस्तक़बिल का इल्म बेचता हो। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जो किसी ग़ैब बताने वाले के पास जाए और उसकी बात माने उसने उस चीज़ का इनकार किया जो मुहम्मद ﷺ पर उतरी।

दूसरा — हर इंसानी ताक़त की नाज़ुकी। तारीख़ की सब से बड़ी सल्तनत, हवा और जिन्न उसके हुक्म में, एक छोटे कीड़े के लकड़ी खाने से गिर गई। बेटा, तुम जो भी बना रहे हो, याद रखो **वो किस पर खड़ा है।**

तीसरा — और ये तुम्हारे लिए ज़ाती है, बेटा। सुलैमान (अलैहि0) **खड़े, अपनी लाठी पर सहारा** लिए, अपने काम के बीच फ़ौत हुए। वो अपना फ़र्ज़ निभाते पाए गए। अल्लाह करे हम में से हर एक उस वक़्त उठाया जाए जब हम अपनी जगह खड़े हों — नमाज़ पढ़ते, ईमानदारी से काम करते, अपने घरवालों की ख़िदमत करते — और उस जगह नहीं जहाँ पाए जाने पर हम शर्मिंदा हों।

सबा की क़ौम: दो बाग़

और अब, बेटा, वो कहानी जो इस सूरह को उसका नाम देती है — और ये एक ऐसी तहज़ीब की कहानी है जिसके पास सब कुछ था।

'**लक़द काना लि-सबा-इन फ़ी मस्कनिहिम आयह** — **सबा** के लिए उनके **रिहाइश-गाह** में एक **निशानी** थी — **जन्नतानि 'अंय्यमीनिंव्-व शिमाल** — **दो बाग़, दाएँ** और **बाएँ।**'

बेटा, सबा यमन में था, और उनकी इंजीनियरिंग अफ़्सानवी थी — उन्होंने एक अज़ीम **बाँध** बनाया जो मौसमी सैलाबों को रोकता और उनकी वादियों को सींचता। नतीजा: दोनों तरफ़ फैले बाग़, इतने मुसलसल कि एक मुसाफ़िर साए में चल सकता था। मुअर्रिख़ नक़्ल करते हैं कि ज़मीन इतनी ज़रख़ेज़ और कीड़ों से इतनी पाक थी कि वो पूरे अरब में मशहूर थी।

और उन्हें अल्लाह का हुक्म इतना सादा था जितना एक हुक्म हो सकता है: '**कुलू मिर्-रिज़्क़ि रब्बिकुम वश्कुरू लह** — **अपने रब के रिज़्क़ में से खाओ और उसका शुक्र करो** — **बल्दतुन तय्यिबतुंव्-व रब्बुन ग़फ़ूर** — **एक पाक सर-ज़मीन, और**

एक बख़्शने वाला रब।'

बेटा, देखिए कितना कम माँगा गया। खाओ — लुत्फ़ उठाओ, ये तुम्हारा है। और शुक्र कहो। बस इतना। और इस इंतेज़ाम का बयान देखिए: एक पाक सर-ज़मीन, और एक बख़्शने वाला रब — यानी जब तुम फिसलो भी, वो माफ़ करता है।

'**फ़-अअ्रज़ू — मगर वो मुँह मोड़ गए।**'

बेटा, तीन लफ़्ज़। **यही सबा का पूरा जुर्म है।** तफ़्सील से बयान-शुदा बुत-परस्ती नहीं, ज़ुल्म नहीं — वो बस शुक्र से मुँह मोड़ गए।

'**फ़-अर्सल्ना 'अलैहिम सैलल्-'अरिम** — तो हमने उन पर **बाँध** का **सैलाब** भेज दिया — **व बद्दल्नाहुम बि-जन्नतैहिम जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन ख़म्तिंव्-व अस्लिंव्-व शै-इम्-मिन सिद्रिन क़लील** — और उनके दो बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें **कड़वे फल, झाऊ**, और कुछ छोटी **बेरी** थी।'

बेटा, बाँध फट गया। **वो पानी जो उनकी नेमत था उनकी तबाही का आला बन गया — वही पानी।** और उनके बाग़ काँटों-भरी, कड़वी झाड़ी से बदल दिए गए।

'**ज़ालिक जज़ैनाहुम बिमा कफ़रू** — यूँ हमने उन्हें उनकी **ना-शुक्री** का बदला दिया — **व हल नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर** — **और क्या हम ना-शुक्रे के सिवा किसी को सज़ा देते हैं?**'

बेटा, पूरे में इस्तेमाल हुआ लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: 'कफ़रू', 'अल-कफ़ूर' — उस अस्ल से जिसका मतलब **कुफ़्र करना और ना-शुक्रा होना** दोनों है। अरबी में वही अस्ल दोनों को ढाँपता है, क्योंकि ये एक ही बीमारी की मुख़्तलिफ़ गहराइयाँ हैं: **जो तुम्हें दिया गया उसे तस्लीम करने से इनकार।**

और फिर उन्होंने एक अजीब दरख़्वास्त की, बेटा: '**फ़-क़ालू रब्बना बा'इद बैन अस्फ़ारिना** — ऐ हमारे रब, **हमारे सफ़रों के दरमियान फ़ासला बढ़ा दे!**'

बेटा, उनका तिजारती रास्ता जुड़े हुए गाँव से गुज़रता था, इतना छोटा और महफ़ूज़ कि सफ़र आसान और पुर-अम्न था। और वो आसानी से ऊब गए। वो दूसरे ताजिरों जैसे लंबे, मुश्किल, पुर-शान सफ़र चाहते थे। **उन्होंने अपने ही आराम के छीने जाने**

की दरख़्वास्त की।

'**फ़-ज'अल्नाहुम अहादीस व मज़्ज़क़्नाहुम कुल्ल मुमज़्ज़क़** — तो हमने उन्हें **कहानियाँ** बना दिया और उन्हें पूरी तरह **बिखेर** दिया।'

बेटा, 'अहादीस' — कहानियाँ। उनकी पूरी तहज़ीब एक ऐसा क़िस्सा बन गई जो लोग सुनाते हैं। बाद के अरब उनके बिखरने को एक ज़र्ब-उल-मिसाल के तौर पर इस्तेमाल करते: वो सबा की क़ौम की तरह बिखेर दिए गए।

बेटा, और यहाँ घर ले जाने वाला सबक़ है: वो सिर्फ़ क़त्ल या बुतों के लिए तबाह नहीं किए गए। **क़ुरआन उनके जुर्म को शुक्र से मुँह मोड़ना नाम देता है** — और फिर, उस से बुरा, अपनी नेमतों को मुश्किल बनाए जाने की दरख़्वास्त।

ख़ुद से ईमानदारी से पूछिए, बेटा: क्या हम ये करते हैं? हमारे घर का सुकून, जिसे हम बोरिंग कहते हैं। वो मुस्तक़िल नौकरी जिसे हम बे-मज़ा कहते हैं। वो सेहत जिसे हम ग़ौर करना भूल जाते हैं। वो घरवाले जो हमें खिझाते हैं और जिनकी ग़ैर-मौजूदगी हमें तबाह कर देगी। **सबा ने अल्लाह से अपनी आसान सड़क मुश्किल बनाए जाने को कहा — और उसने उन्हें जवाब दे दिया।**

अल्लाह के लिए खड़े हो, दो-दो और अकेले

फिर सूरह उस सिफ़ारिश पर बात करती है जिसे लोग तसव्वुर करते थे, और यहाँ एक शान-दार मंज़र है: '**हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि'अ 'अन क़ुलूबिहिम क़ालू माज़ा क़ाल रब्बुकुम क़ालुल्-हक़्क़** — यहाँ तक कि जब उनके **दिलों** से **दहशत** हटाई जाएगी, वो कहेंगे: तुम्हारे रब ने क्या कहा? वो कहेंगे: **हक़।**' बेटा, जब अल्लाह बात करते हैं, फ़रिश्ते तक मबहूत हो जाते हैं, और एक दूसरे से पूछते हैं कि क्या कहा गया।

और अल्लाह अपने रसूल ﷺ को एक सादा सवाल पूछने का हुक्म देते हैं: '**क़ुल मंय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्-समावाति वल्-अर्ज़** — कहो: तुम्हें आसमानों और ज़मीन से **कौन रिज़्क़** देता है? **क़ुलिल्-लाह** — **कहो: अल्लाह।**' बेटा, वो उन्हें पूछने **और** जवाब देने का हुक्म देते हैं, क्योंकि जवाब इतना ज़ाहिर है कि मुख़ालिफ़ उसे ज़ुबान से न कहेगा।

'**व इन्ना औ इय्याकुम ल-'अला हुदन औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन** — और बेशक, **हम या तुम** या तो हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में।'

बेटा, बहस में वो अदब देखिए। वो ये नहीं कहते 'हम सही हैं और तुम ग़लत'। वो कहते हैं: हम में से एक हिदायत-याफ़्ता है और एक गुमराह — अब इस की जाँच करें। **यूँ आप उस से बात करते हैं जिसे आप वाक़ई पहुँचना चाहते हैं।**

'**व मा अर्सल्नाक इल्ला काफ़्फ़तल्-लिन्-नासि बशीरंव्-व नज़ीरा** — और हमने तुम्हें सिर्फ़ **तमाम इंसानियत** के लिए भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला — **व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला यअ्लमून** — मगर ज़्यादा तर लोग नहीं जानते।'

बेटा, 'काफ़्फ़तल्-लिन्-नास' — **सब** लोगों के लिए। उन से पहले हर नबी अपनी ख़ुद की क़ौम के लिए भेजा गया; ये एक सारी इंसानियत के लिए भेजा गया, वक़्त के इख़्तिताम तक।

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जिसपर मैं चाहता हूँ आप ये सूरह ख़त्म करें — वो वाहिद नसीहत जो क़ुरआन पेश करता है:

'**क़ुल इन्नमा अ'इज़ुकुम बि-वाहिदह — कहो: मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूँ — अन तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्म ततफ़क्करू — कि तुम अल्लाह के लिए, दो-दो और अकेले-अकेले, खड़े हो, और फिर ग़ौर करो।**'

बेटा, एक नसीहत — और ये वो है। अल्लाह के लिए **खड़े** हो — 'मस्ना व फ़ुरादा', दो-दो और अकेले — और फिर **सोचो।**

'दो-दो और अकेले' क्यों? क्योंकि **एक भीड़ सोचती नहीं**, बेटा। एक बड़े इज्तिमा' में, लोग माहौल, सब से ऊँची आवाज़, इज्तिमाई जज़्बे की पैरवी करते हैं। सच एक फ़र्द के ईमानदारी से सोचने से मिलता है, या दो लोगों के साथ मिल कर किसी चीज़ की जाँच करने से।

और 'सुम्म ततफ़क्करू' — फिर **ग़ौर** करो। यही इस किताब की हर इंसान को पूरी दावत है: भीड़ के शोर से दूर हटो, अल्लाह के लिए खड़े हो, और इस पैग़ाम पर

ईमानदारी से सोचो। **क़ुरआन इतना पुर-ए'तिमाद है कि सिर्फ़ इतना माँगता है।**

'**मा बि-साहिबिकुम मिन जिन्नह** — तुम्हारे साथी में कोई **जुनून** नहीं — **इन हुव इल्ला नज़ीरुल्-लकुम बैन यदै 'अज़ाबिन शदीद** — वो तो बस तुम्हें एक सख़्त अज़ाब से पहले ख़बरदार करने वाला है।'

'**क़ुल मा सअल्तुकुम मिन अज्रिन फ़-हुव लकुम** — कहो: जो मुआवज़ा मैंने तुम से माँगा हो — **वो तुम्हारा है** — **इन अज्रिय इल्ला 'अलल्-लाह** — मेरा अज्र तो सिर्फ़ **अल्लाह** के ज़िम्मे है।'

और सूरह की इख़्तितामी तंबीह: '**क़ुल जाअल्-हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा यु'ईद — कहो: हक़ आ गया, और बातिल न कुछ शुरू कर सकता है न दोबारा ला सकता है।**'

बेटा, क्या लाइन पर ख़त्म करने को। बातिल न कुछ ईजाद कर सकता न बहाल। **उसके पास अपनी कोई तख़्लीक़ी ताक़त नहीं — वो हमेशा सिर्फ़ नक़्ल, बिगाड़ और उधार करता है।** और जब हक़ आ जाए, उसके पास करने को कुछ नहीं बचता।

इस सूरह से क्या सीखा

1. एक ज़र्रा भर — न उस से छोटा कुछ — उसके इल्म से नहीं बचता।

2. शुक्र अमल है, एहसास नहीं: 'इअ्मलू आल दाऊद शुक्रा' — और उसके बंदों में शुक्र-गुज़ार कम ही हैं।

3. कोई ग़ैब नहीं जानता: जिन्न ये तक न बता सके कि एक मुर्दा आदमी खड़े रहना छोड़ चुका।

4. एक दीमक ने तारीख़ की सब से बड़ी सल्तनत गिरा दी — याद रखो तुम्हारी अपनी इमारत किस पर खड़ी है।

5. सबा एक चीज़ के लिए तबाह हुई: शुक्र से मुँह मोड़ना — और फिर अपनी आसानी मुश्किल बनाए जाने की दरख़्वास्त।

6. बहस वैसे करो जैसे क़ुरआन करता है: 'हम में एक हिदायत पर है और एक गुमराही में — आओ जाँचें।'

7. किताब की वाहिद नसीहत: अल्लाह के लिए, दो-दो या अकेले, खड़े हो, और फिर सोचो — भीड़ से दूर।

या अल्लाह, हमें उन चंद शुक्र-गुज़ारों में बना दीजिए, हमें हमारी जगह खड़े रहते उठाइए, और हमें आप के लिए ईमानदारी से सोचने दीजिए। आमीन।